त्रेयक पर शिक्षण

रूपरेखा

१. ईश्वरत्व की अनेकता के सिद्धान्त को समझना
   इस संकल्पना को हम कुछ ही हद्द तक समझ सकते हैं
   जीवन से पहले प्रेम है
   घनाकृति (क्यूब-एक ठोस कांच जिसके छः समानान्तर चौकोन सिरे होते हैं) का उदाहरण
   परमेश्वर के विस्तारित रूप में होने की योग्यता पर क्या आपको सन्देह है?
   हमारा मकसदः इस प्रेम करने वाले परमेश्वर को सभी जान पाएं

२. एक ईश्वरत्व और तीन व्यक्तिमत्व
   वो वचन जहाँ पर तीनों का उल्लेख एकसाथ किया गया है
   उन तीनों की अपनी सोच और अपनी इच्छा है और वो वचनों के द्वारा बात करते हैं

३. ऐसे वचन जहाँ यीशु मसीह को सर्वशक्तिमान परमेश्वर (यहोवा) कहकर बुलाया गया है

४. क्या यीशु का स्तर पिता से नीचा/कम है?

   कुछ कठीन अनुच्छेदों का वर्णन

ईश्वरत्व की अनेकता के सिद्धान्त को समझना

1. स्वर्गिक बातों को हम पूरी तरह से समझ नहीं सकते

यूहन्ना 3:12 स्वर्ग में परमेश्वर को यीशु के सिवा और किसी ने नहीं देखा, और उन्होंने कहा कि स्वर्ग की बातें हम पूर्णरूप से समझ नहीं सकते। (नीकुदेमुस से कहा)

फिर भी वचनों के द्वारा कुछ हद्द तक हम ईश्वरत्व को समझ सकते हैं। लेकिन हमें कहीं न कहीं इस बात के अधिक विश्लेषण को रोककर, यीशु जो कह रहे हैं (कि हम स्वर्ग की बातों को पूरी तरह से समझ नहीं सकते) उसपर विश्वास करना है।

2. क्या परमेश्वर अकेले ही हैं या त्रेयक हैं?

अकेले का अर्थ है, कि परमेश्वर केवल एक है और वही परमेश्वर है अर्थात् वह अकेले ही परमेश्वर हैं!
इस्लाम, यहोवा विटनेस और मोरमोन्स की यही धारणा है।
त्रेयक का अर्थ है, परमेश्वर एक हैं और उनके एकीकरण को हम हमारे ३डी संसार की तरह सीमित नहीं कर सकते, क्योंकि परमेश्वर इस संसार से, इसके समय से और इसकी बातों से परे हैं और वे असीमित हैं।
परमेश्वर जिसने इस सृष्टि की रचना की; यदि शुरूआत में अकेले थे, तो प्रेम क्या है यह उन्होंने कैसे जाना?

सिर्फ परमेश्वर के एकीकरण की संकल्पना में ही हमें ईश्वरत्व के तीन व्यक्तिमत्व में बन्धुत्व और प्रेम दिखाई पड़ता है।
सिर्फ परमेश्वर के एकीकरण की संकल्पना में हम 'जीवन से पहले प्रेम' को देखते हैं, और परमेश्वर के अकेले होने में हमें 'प्रेम से पहले जीवन दिखाई' पड़ता है।
प्रश्न यह उठता है कि सृष्टि की रचना से पहले यदि परमेश्वर **अकेले** थे तो वो प्रेम कैसे कर पाएंगे?
सृष्टि की रचना से पहले हम परमेश्वर के साथ बन्धुत्व में यीशु के उदाहरण को देखते हैं (यूहन्ना 17:5 मेरी तेरे साथ 17:24 मुझसे प्रेम किया)।

परमेश्वर के बनाए हुए संसार में हम अनेकता में एकता देखते हैं। इसी तरह स्वर्ग में भी 'अनेकता में सिध्द एकता है'।

ईश्वरत्व एक है, और हमारे सामने परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा, इन तीन व्यक्तिमत्वों में उजागर किया गया है। तीन से ज्यादा क्यों नहीं? अपने आपको मनुष्यों पर प्रकट करने के लिये तीन ही काफी थे।

परमेश्वर असीमित हैं

परमेश्वर को समझने के लिये हमारे संसार के सीमित ३डी समझ के अनुसार हमें उन्हें सीमित नहीं करना है, क्योंकि वह समय, अवधी और भौतिक वस्तु से परे हैं।

एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण लो जो २डी जग में रहता है और ३डी क्यूब को समझने का प्रयत्न कर रहा है।

हर बार जब हम उस क्यूब को घुमाकर उसे उसका एक हिस्सा दिखाते हैं तो उसे हर बार क्यूब का अलग रंग दिखाई देता है और वह क्यूब के छः हिस्सों को देखता है। हम जो ३डी संसार में रहते हैं, उससे यदि यह कहें कि इसके छः हिस्से हैं फिर भी क्यूब एक ही है, वह इसे समझ नहीं पाएगा कि छः चौकोन एक क्यूब कैसे हो सकता है।

ठीक इसी तरह हम जो ३डी संसार में रहते हैं, हम परमेश्वर को समझ नहीं सकते जो हमारे इस ३डी संसार से कहीं अधिक बढ़के हैं, वह असीमित हैं।

हम परमेश्वर में विश्वास करते हैं कि वह हर एक की प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं। फिर भी हम उन्हें अपनी सीमाओं में बान्धना चाहते हैं।

परमेश्वर जो हर जगह रहने और हरएक की बातों को सुनने में सामर्थी हैं, तो एक से अधिक व्यक्तिमत्व होने के बावज़ूद भी वह **एक** होने में सामर्थी हैं। हमें परमेश्वर की इस योग्यता पर सन्देह नहीं करना चाहिये कि वे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा तीनों होने के बावज़ूद भी ईश्वरत्व में **एक** हैं।

परमेश्वर अकेले हैं यह धारणा उन्हें, 'प्रेमरहित और दोषी ठहराने वाला' परमेश्वर बना देता है। जबकि क्रूस पर मसीह में जो प्रकट किया गया वह प्रेम करने वाला और न्यायी परमेश्वर है। हमारा एक मकसद है कि सच्चे परमेश्वर को सब जान पाएं। आओ हम इस बात की घोषणा करने में जोशीले बनें।

४. यीशु यहोवा है

जकर्याह 12:10 यहाँ पर यहोवा बात कर रहे हैं और वह जिसे उन्होंने बेधा है अर्थात् यीशु(यूहन्ना 19:37, प्रकाशितवाक्य 1:7) यहोवा है।